राष्ट्रीय सन्दर्भ में भोटी भाषा का महत्त्व

विद्यासागर नेगी *

भोटी नामकरण

जब हम भोटी या भोट-भाषा की बात करते हैं तो हमें यह सोचने के लिए विवश होना पड़ता है कि आखिर यह भोटी भाषा किस देश की भाषा है और इसे भोटी नाम से क्यों अभिहित किया जाता है? सीधे तौर पर कहा जाए तो यह भाषा भोट देश जिसे आज की दुनियाँ तिब्बत या टिबेट के नाम से अधिक जानती व पहचानती है, की भाषा है। किन्तु इसका मायना यह नहीं है कि यह केवल भोट देश के लोगों की ही मातृभाषा है। यह एक ऐसी भाषा है जो हिमालय के उस पार यानि भोट देश के निवासियों के साथ-साथ हिमालय के इस ओर के हिमालयी सीमान्त क्षेत्रों के निवासियों की भी मातृभाषा है। कुछ हिमालयीय क्षेत्रों को छोड़कर देखें तो लद्दाख से लेकर अरूणाँचल तक के हिमालयीय क्षेत्रों को भाषायी तौर पर यदि कोई भाषा जोड़ती है तो वह है, भोटी भाषा। यहाँ पर यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि उपर्युक्त सभी हिमालयीय क्षेत्रों में इस भाषा को भोटी के नाम से अभिहित नहीं किया जाता है। कहीं पर यह भाषा लद्दाखी या बोद-यिक के नाम से तो कहीं पर यह भोटी, बोधि, बोद-स्कद, ञमस्कद आदि, विभिन्न नामों से जानी जाती है।

****fo|klkxj usxh***] ckS) fo|k dsUnz] fg0iz0 fo'ofo|ky;] lejfgy] f'keyk

भारतीय सीमान्त क्षेत्रों के भोटी भाषा-भाषी लोगों के अतिरिक्त शेष भारत यानि हिन्दी जगत इस भाषा को प्रायः तिब्बती भाषा के नाम से तो अंग्रेजी जगत इसे टिबेटन लैंगवेज (Tibetan Language) के नाम से जानती है। लद्दाख से लेकर अरूणाँचल तक के हिमालयीय सीमान्त के लोगों द्वारा बोली जाने वाली भोटी भाषा में कुछ क्षेत्रगत भिन्नताएँ अवश्य दृष्टिगत होती हैं किन्तु इन्हें मूल भोटी भाषा से किसी भी तरह पृथक है ऐसा नहीं कहा जा सकता है। यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि आखिर तिब्बत को भोट देश क्यों कहा गया? जहाँ तक तिब्बत को भोट देश कहने की बात है, यह नाम अतीत में भारतीयों द्वारा दिया गया नाम है। भारतीय प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में तिब्बत के लिए ‘‘त्रिविष्टप’’ भी कहा गया है। यह त्रिविष्टप शब्द स्वर्ग के नौ पर्यायवाची नामों में से एक है। भोट देश के लिए तिब्बत नाम आज दुनिया में व्यवहृत होने के कारण भोट देशीय लोग भोट देशीयेतर लोगों के साथ व्यवहार करते समय भले ही अपने देश के लिए तिब्बत या तिबेट और अपने लिए तिब्बती या टिबेटन नाम का व्यवहार करें किन्तु वे अपने लोगों तथा भोटी भाषा-भाषी भारतीय हिमालयीय क्षेत्रों के लोगों के साथ व्यवहार करते समय अपने देश के लिए न तो तिब्बत या टिबेट नाम का व्यवहार करते हैं और न ही अपने लिए तिब्बती या टिबेटन ही कहते हैं। ये लोग अपने देश को ‘‘बोद’’ या ‘‘बोद युल’’ यानि ‘‘बोद’’ या ‘‘बोद देश’’ और अपने को ‘‘बोद-पा’’ यानि बोद वासी कहते हैं। भोटी भाषा-भाषी भारतीय हिमालयीय वासी भी तिब्बत को ‘‘बोद’’ या ‘‘बोद युल’’ और इस देश के निवासियों को ‘‘बोद-पा’’ कहते हैं। इतना ही नहीं सर्वत्र भोटी वाङ्मय में जहाँ कहीं भी तिब्बत का जिक्र हुआ है, कुछ अपवादों को छोड़कर सर्वत्र तिब्बत के लिए इसी ‘‘बोद’’ नाम का ही व्यवहार हुआ है और आज भी हो रहा है। यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि आखिर इस देश का नाम ‘‘बोद’’ कैसे पड़ा होगा? इस सम्बन्ध में भोट देशीय विद्वानों में मतैक्य नहीं है। कुछ भोट देशीय विद्वानों का मानना है कि भोट देश का प्राचीन नाम ‘‘पुर्ग्यल’’

उच्चा0 (पुग्यल) भी था और यही ''पुर्ग्यल'' नाम कालान्तर में ''बोदग्यल'' हो गया। इस प्रकार अतीत में तिब्बत का नाम ''बोद'' पड़ गया।

इस ''पुर्ग्यल'' शब्द के सम्बन्ध में कहा जाता है कि पहले जब ''ग्रि-गुम-बूच़न-पो (उच्चा डि-गुम-च़न-पो) नामक तिब्बत के 8 वें राजा के पुत्र व्य-ख्रि-बूच़न-पो (उच्चा0 ज-ठि-च़न-पो)[4] को तिब्बत के कोङ-पो क्षेत्र से (युम-बु-लाखर) आमन्त्रित किया तो उसकी माँ ने, ''ङहि-बु-हृदि-ग्रि-गुम-ग्यि-यिन-न-(बोद-क्यि)-छब-स्निद-बूर्तन-पर-शोग'' यानि मेरा पुत्र यह डि-गुम-का हो तो बोद राज्य दृढ़ होवे'' कहा। कहते हैं, माँ द्वारा ऐसा कहते समय आकाश से 'ख्योद-क्यि-बु-हृदि-कुन-लस-ग्र्यल-बर-हृग्युर-रो' यानि तुम्हारा पुत्र यह सबसे जय प्राप्त करेगा। ऐसी भविष्यवाणी हुई। कहते हैं, इस आकाशवाणीय भोटी वाक्य का स्थानीय लोगों द्वारा सही उच्चारण न जान पाने के कारण, उन्होंने इसे ''पु-ते-गुङ-ग्र्यल'' उच्चा0 पु-ते-गुङ-ग्यल उच्चारण कर डाला और लोगों ने ''ज-ठि-च़न-पो'' राजा को ''पु-दे-गुङ्-ग्र्यल'' नाम से ही सम्बोधित करना प्रारम्भ कर दिया। कहते है, राजा का यही ''पु-दे-गुङ्-ग्र्यल'' नाम कालान्तर में ''पुर्ग्यल'' उच्चा0 (पुग्यल) होकर भोट देश का नाम पड़ा। जिसे बाद में ''पुर्ग्यल बोद'' उच्चा0 (पुग्यल) बोद भी कहा जाने लगा।

भोट देश का नाम ''बोद'' पड़ने के सम्बन्ध में कुछ भोट देशीय विद्वानों का मत है कि महाभारत के युद्ध में रुवति नाम का राजा अपनी सेना के साथ कौरवों की ओर से सम्मिलित हुआ था, किन्तु बाद में जब युद्ध में कौरवों की हार हुई तो वह अपने एक हजार सैनिकों के साथ स्त्रीवेश में युद्ध भूमि से पलायन कर हिमालय में जा रहने लगा। ''पलायन'' के लिए भोटी शब्द ''ब्रोस'' (उच्चा0 डोस) है, जिसे मध्य भोट देशवासी ''बोस'' भी कहते हैं। कहते हैं, यही ''डोस या बोस'' शब्द ही कालान्तर में ''बोद'' होकर तिब्बत के लिए व्यवहृत हो गया। कुछ विद्वान ''बोद'' शब्द को ''ह'' पूर्वाक्षर युक्त ''हृबोद'' शब्द मानकर, जिसका शब्दार्थ ''बुलाना'' होता है, से बना शब्द मानते हैं। इन विद्वानों के अनुसार महाभारत के युद्ध में

उपरोक्त रुवति नामक राजा जब अपने एक हज़ार सैनिकों के साथ हिमालय में पलायन कर गया और इधर इन्द्रप्रस्थ राज्य की बागडोर पाण्डवों के हाथ में आ गई तो पाण्डवों ने कानूनी कारवाई कर लोगों से स्पुन-ग्यि-ल्हग-म-म-बूसद- प-र्नमस-गर-सोङ-द्रिस-पस यानि (युद्ध में) न मारे गये शेष बचे बन्धु लोग कहाँ गये पूछा तो लोगों ने ''र्ग्यल-पो-रू-व-ति-दूमग-स्तोङ-फ्रग-दङ-बूचस-प- गङस-रिइ-गूसेब-तु- ब्रोस-ब्यस-पहो'' यानि राजा रुवति (अपने एक) हज़ार सैनिकों के साथ हिमालय कन्दरा में पलायन कर गया है, कहा। इस पर पाण्डवों ने ''हो-न-द-दुङ-दे-दग-हूबोद'' यानि यदि ऐसा है तो भी उन्हें बुलाओ'' - यह कहा।

कहा जाता है कि उक्त भोटी वाक्य में प्रयुक्त ''बुलाना'' अर्थक भोटी शब्द ''हूबोद'' ही कालान्तर में तिब्बत का नाम पड गया। महाभारत की युद्ध भूमि से अपने एक हज़ार सैनिकों के साथ हिमालय में पलायन करने वाले राजा रुवति के कथानक के साथ जोड़कर तिब्बत का नाम ''बोद'' पड़ा कहने वाले विद्वान लोग अपनी बात की पुष्टि ''बूदे-ब्येद-बूदग-पो'' यानि शंकर स्वामी द्वारा रचित ''ल्ह-लस-फुल-दु-ब्युङ-व'' यानि देवातिशय स्तोत्र के टीकाकार बंगाल के विद्वान प्रज्ञावर्मा द्वारा देवातिशय स्तोत्र की टीका में किये गए कथन से करते हैं। तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रवेश से पूर्व प्रचलित बोन धर्मावलम्बियों के मतानुसार तिब्बत का ''बोद'' नाम उनका धर्म ''बोन'' के कारण पड़ा है। इनके अनुसार तिब्बत का नाम पहले ''बोन-गि-युल'' यानि बोन (धर्म) का देश था। यही ''बोन-गि-युल'' कालान्तर में ''बोद-युल'' यानि ''बोद देश'' हो गया। इन विद्वानों का कहना है कि ''बोन युल'' के ''बोन'' शब्द में प्रयुक्त ''न'' पराक्षर का ''द'' पराक्षर में परिवर्तन हो गया। भारतीयों द्वारा तिब्बत को अतीत में ''भोट' कहने के सम्बन्ध में तिब्बत के महान विद्वान गेदुन छोस फेल अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक ''देव-थेर-कर-पो'' यानि शुक्ल पुराण में कहते हैं कि पहले ''बोद'' नाम शब्द में प्रयुक्त ''बो'' और ''द'' अक्षरों का अलग-अलग स्पष्ट और स्वतन्त्र उच्चारण होता था। इस कारण ''बोद'' शब्द में प्रयुक्त अल्पप्राण ''ब'' का भारतीय जुबान में

महाप्राण ''भ'' उच्चारण होकर पहले ''बोद'' से ''भोद'' बना, फिर ''भोद'' में प्रयुक्त ''द'' अक्षर का ''ट'' उच्चारण होकर ''भोट'' बन गया। इस प्रकार ''बोद युल'' यानि बोद देश भारतीयों के लिए ''भोट देश'' हो गया। तिब्बत का पश्चिमी क्षेत्र जिसको ''ङरि-कोर-सुम'' कहा जाता है, को कालान्तर में ''बोद'' और शेष तिब्बत को ''बोद-छेन'' यानि ''महाबोद'' कहने की भी परम्परा रही है।

उपरोक्त इन नामों के अतिरिक्त भोट शास्त्रों में तिब्बत को ''ख-ब-चन'' यानि हिमवन्त ''गङस जोङस'' यानि हिमालय, ''गङस चन'' यानि हिमवन्त, ''ब्रसिल-दन-गि-ज़ोङस'' यानि शीतवान प्रदेश भी कहा गया है। इन नामों में ''ख-ब-चन'' या ''गङस-चन'' यानि हिमवन्त और ''गङस-ज़ोङस'' यानि हिमालय नामों के सम्बन्ध में गेदुन छोस-फेल का मानना है कि ये दोनों नाम शब्द भारतीय शब्द हिमवन्त और हिमालय का अर्थानुवाद है। पहले ये दोनों नाम तिब्बत के दक्षिण में स्थित हिमालय पर्वत के ही नाम थे जो कालान्तर में सम्पूर्ण तिब्बत के लिए व्यवहृत हो गया। ''जगब-पा-वङ-छुग-दे-दन'' जिन्होंने ''बोद-क्यि-स्निद-दोन-ग्र्यल-रबस'' यानि तिब्बत का राजनैतिक इतिहास नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की है, का मानना है कि तिब्बत के लिए ''ख-ब-चन'' ''गङस-ज़ोङस, गङस-चन, सिलदन-गि-जोङस'' जो नाम दिये गये हैं, ये सारे नाम इस देश के लिए इसके दक्षिणी क्षेत्र में स्थित हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं पर तथा इसकी उतरी दिशा में स्थित इस क्षेत्र की सभी पर्वत-श्रृंखलाओं पर अत्यधिक बर्फ की सदैव विद्यमानता तथा तिब्बत में ग्रीष्म काल में भी कभी न पिघलने वाली बर्फ से आच्छादित पर्वतों की विद्यमानता के कारण दिये गये हैं।

चीन के पुराने कार्यालयीय कागज़ातों में तिब्बत के लिए यद्यपि ''तुऊफन'' कहा गया है किन्तु अतीत में चीन के लोग तिब्बत को ''फोन-गि-युल'' यानि 'फोन देश'' भी कहते थे। जहाँ तक चीन के लोगों द्वारा अतीत में तिब्बत को ''फोन-गि-युल'' कहने की बात है, यह अतीत में तिब्बत के बोन धर्मावलिम्बयों द्वारा तिब्बत को ''बोन-गि-युल'' यानि ''बोन देश''

कहने को चीन के लोगों द्वारा ''फोन-गि-युल'' यानि ''फोन देश'' कह देना मात्र है। या यूँ कहिए ''बोन-गि-युल'' वाक्य में प्रयुक्त ''बोन'' और ''फोन-गि-युल'' वाक्य में प्रयुक्त ''फोन'' - इन दो शब्दों की ध्वनि सम्बन्धी समानता के कारण चीनियों ने ''बोन-गि-युल'' को ''फोन-गि-युल'' कह दिया है।

मंगोल के पुराने कार्यालयीय कागज़ातों में तिब्बत के लिए ''थुभद'' थाई देश के पुराने कार्यालयीय कागज़ातों में ''थिबत'' अरब के पुराने कार्यालयीय कागज़ातों में ''तुब्बत'' भी कहा गया है।

विद्वान गेदुन छोस-फेल भोट देश के लिए आज दुनिया में प्रचलित ''तिब्बत'' को अतीत में इसके लिए प्रचलित चीनी नाम ''तुऊफन'' तथा मंगोली नाम ''थुभद'' का अपभ्रंश मानते हैं। साथ ही, आगे वे यह भी कहते हैं कि कुछ लोग ''तिब्बत'' नाम शब्द का प्रचलन सर्वप्रथम काश्मीरी भाषा में हुआ था, भी मानते हैं। ऐसा मानने वाले लोगों का कहना है कि अतीत में काश्मीर का लद्दाख के साथ अधिक सम्बन्ध होने के कारण काश्मीर के लोगों ने लद्दाख क्षेत्र के लोगों को 'स्तोद-बोद'' यानि ऊपरि बोद (वासी) या ''स्तोद-पा'' यानि ऊपरि (क्षेत्र) वासी, कहना प्रारम्भ कर दिया। काश्मीरियों द्वारा लद्दाख क्षेत्र के लोगों के लिए प्रयुक्त उक्त ''स्तोद-बोद'' अथवा ''स्तोद-पा'' शब्द ही कालान्तर में काश्मीरी भाषा में 'अपभ्रंश'' होकर ''तिब्बत'' बना है।

जगब-पा-वङ-छुग-दे-दन का मानना है कि आज भोट देश के लिए प्रचलित ''तिब्बत'' नाम इसके उपरोक्त चीनी नाम ''तुऊफन'' मंगोली नाम ''थुभद'' थाई नाम ''थिबत'' अरबी नाम ''तुब्बत'' से अपभ्रंश हुआ है।

इधर किन्नौर के विद्वान प्रोफेसर सेम्पादोर्जे भोट देश का तिब्बत नामकरण के सम्बन्ध में कहते हैं कि मंगोलवासी अतीत में भोट देश को ''थुभद'' कहते थे। सन् 765-809 के बीच में अरब देश के व्यापारियों ने चीन तथा मंगोल के साथ रेशम का विशेष व्यापार चलाया। तब

से अरब के लोगों ने भी ''भोट देश'' को मंगोलवासियों की भाँति ''थु-भद'' कहना प्रारम्भ कर दिया। अंग्रेज भारत में आये तो उन्होंने अरबियों के उच्चारण के अनुसार (थोड़ा अन्तर के साथ ''भोटदेश'' को (थु-भद के स्थान पर) ''थिब्बत'' ही कहना प्रारम्भ कर दिया। उसी को आज तिब्बत कहा जाता है। यह भारतीय उच्चारण है। पश्चिमी उच्चारण में आज तिब्बत को ''टिबेट'' कहा जाता है। जो भी हो, आज दुनिया के लिए भोट देश ''तिब्बत'' या ''टिबेट'' है। यह विश्व में सबसे ऊँचाई पर स्थित देश है। इसीलिए इसे विश्व की छत भी कहा जाता है।

भोटी भाषा का महत्त्व

जहाँ तक भोटी भाषा के महत्त्व की बात है, यह भाषा तिब्बत के लोगों तथा भारतीय हिमालयीय बौद्ध जनता की न केवल मातृभाषा है प्रत्युत् यह इस क्षेत्र के लोगों की धर्म भाषा भी है। हिमालयीय क्षेत्रों के लोगों की संस्कृति की यह संवाहिका है। लद्दाख से लेकर अरूणाँचल तक की अधिकाँश जनता बौद्ध है। इनकी पूरी जीवनचर्या बौद्धमय है। इन क्षेत्रों में जो बौद्ध धर्म वर्तमान में प्रचलित है, वह पालि तथा संस्कृत भाषा में निबद्ध बौद्ध धर्म नहीं है और न ही यह भारत के मैंदानी क्षेत्रों से आया बौद्ध धर्म ही है। यह बौद्ध धर्म भारत से तिब्बत जाकर वहाँ से भोटी भाषा में निबद्ध होकर लौट कर आने वाला बौद्ध धर्म है। धर्म के आधार पर कहें तो बौद्ध धर्म ने और भाषा के आधार पर कहें तो भोटी भाषा ने लद्दाख से लेकर अरूणाँचल तक की जनता को एक सूत्र में पिरोने का काम भी किया है।

आज प्राचीन भारत का बौद्धमय अतीत यत्रतत्र खण्डहर रूप में उपलब्ध है। नालन्दा, विक्रमशिला, ओदन्तपुरी आदि विश्वविख्यात महाविहार आज खण्डहर रूप में अपने गौरवपूर्ण बौद्धमय अतीत को याद कर-कर के आँसू बहा रहे हैं। इनके अतीत की गौरवपूर्ण गाथाएँ सब नष्ट कर दी गईं हैं। इन बौद्ध महाविहारों में तत्कालीन विद्यमान मूल संस्कृत बौद्ध वाङ्मय को

आक्रान्ताओं ने अग्नि की भेंट चढ़ा दी थी, किन्तु यह सौभाग्य की बात है कि जो तिब्बत देश अतीत में एक शिष्य के रूप में भारत आया था, उस देश ने उपरोक्त महाविहारों के ग्रन्थालयों में उस समय विद्यमान सम्पूर्ण संस्कृत बौद्ध वाङ्मय को भोटी भाषा में अनूदित कर कनग्युर (काग्युर) और तनग्युर के रूप में आज तक न केवल सुरक्षित रखा बल्कि प्रचारित भी किया। जहाँ तक कनग्युर और तनग्युर की बात है, यह केवल कुछ ग्रन्थों के संग्रह रूप नहीं हैं, बल्कि यह तीन सौ वाल्युमों में हज़ारों बौद्ध ग्रन्थों का एक विशाल संग्रह है। कनग्युर के अर्न्तगत बुद्धवचन संगृहीत हैं, तो तनग्युर के अन्तर्गत बुद्धवचनों पर भारतीय आचार्यों द्वारा की गई व्याख्याएँ संगृहीत हैं। आज हिमालयीय क्षेत्रों के बौद्ध विहारों में सुन्दर वेष्टनों में वेष्टित जो हजारों की संख्या में पाण्डुलिपियाँ हैं, वे सारी कभी संस्कृत में उपलब्ध थीं। आज उनमें से कुछ को छोड़कर अन्य मूल संस्कृत में उपलब्ध नहीं होती हैं, किन्तु उनके भोटी अनुवाद आज गोन्पाओं यानि बौद्ध विहारों में सुरक्षित हैं। या यूँ कहिए भारत का गौरवपूर्ण बौद्धमय अतीत भोटी भाषा में सुरक्षित है।

भोटी भाषा ने भारतीय हिमालयीय क्षेत्रों में तथा भोटी-भाषा-भाषी भारतेतर देशों में बौद्ध धर्म-दर्शन तथा संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अतीत में बहुत बड़ी भूमिका निभायी है। आज विश्व में जिस प्रकार से बौद्ध धर्म की महायानी शाखा का पुनर जागरण हो रहा है, इसका मूलकारण भोटी भाषा ही है। यदि अतीत में इसने अनुवाद रूप में बौद्ध धर्म की इस महायानी शाखा का संरक्षण न किया होता तो आज बौद्ध धर्म की यह शाखा प्रायः लुप्त हो चुकी होती। इसी भाषा ने भारत के गौरवमय बौद्ध अतीत को आज तक ज्यों का त्यों संभाले रखा है। आज भले ही बौद्ध धर्म की महायानी शाखा अपनी मूल भाषा संस्कृत में उपलब्ध न हो किन्तु भोटी भाषा में यह सांगोपांन न केवल संरक्षित ही है अपितु संवर्द्धित भी है। परम पावन दलाईलामा जी आज विश्व के कौने-कौने में जाकर भोटी भाषा के माध्यम से विश्व शान्ति का जो सन्देश दे रहे हैं वह प्रकारान्तर से आर्यदेश भारत का ही सन्देश है। तिब्बत के

लोगों की जिस संस्कृति को प्रायः तिब्बती संस्कृति के नाम से अभिहित किया जाता है वह संस्कृति तिब्बत की ही नहीं भारतीय हिमालय की भी है। या यूँ कहिए यह भारतीय हिमालयीय क्षेत्रों तथा तिब्बत की एक साँझी संस्कृति है। इसका संरक्षण भोटी भाषा के कारण ही सम्भव हुआ है, इसे हमें नहीं भूलना चाहिए। तिब्बत के विद्वानों ने भोटी भाषा के माध्यम से न केवल बौद्ध धर्म दर्शन का संरक्षण किया है बल्कि भारत में बौद्ध धर्म के इतिहास को भी संरक्षित किया है। आज सुम्भ खन-पो ये-शेस-पलजोर, बुस्तोन रिनपोछे, लामा तारानाथ आदि विद्वानों के बौद्ध धर्म से सम्बन्धित ऐतिहासिक ग्रन्थ अत्यन्त प्रामाणिक हैं।

आज विशेषकर भारतीय हिमालयीय क्षेत्रों में जो बौद्ध कलाएँ, यथा भित्ति चित्रकला पटचित्रकला, मूर्तिकला, स्तूप निर्माण कला, बौद्ध विहार निर्माण कला, कंकणी निर्माण कला आदि जो भी कलाएँ प्रचलित हैं, ये सब कलाएँ मूल रूपेण भारतीय तो अवश्य हैं, किन्तु ये कलाएँ जिस भाषा में संरक्षित होकर इन हिमालयीय क्षेत्रों में प्रचलित हुई हैं, वह भाषा कोई दूसरी नहीं, भोटी भाषा ही है। इसे हमें अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए।

हिमालयीय क्षेत्रों में सर्वत्र दिखनेवाली भोटी भाषा में लिखित धार्मिक शिलालेखों की लम्बी-लम्बी दीवारें जिन्हें हिमालयीय भोटी भाषा-भाषी जनता मणे या मनदङ यानि मणि दीवार के नाम से जानती है, ये मात्र धार्मिक शिलालेखों की लम्बी-लम्बी दीवारें ही नहीं हैं प्रत्युत् ये हिमालयीय क्षेत्रों के सांस्कृतिक इतिहास के प्रामाणिक स्रोत भी हैं। इन्हीं धार्मिक शिलालेखों की दीवारों में वे ऐतिहासिक शिलालेख भी होते हैं जिनके माध्यम से इन क्षेत्रों के सांस्कृतिक अतीत को इतिहास की परिधि में समेटा जा सकता है। इतना ही नहीं, हिमालयीय क्षेत्रों में विद्यमान प्राचीन बौद्ध विहारों की भित्तियों पर भोटी भाषा में लिखित भित्ति लेख तथा इन बौद्ध विहारों में से किन्हीं-किन्हीं बौद्ध विहारों में विद्यमान भोटी भाषा में लिखित पत्रलेख, ताम्र पटलेख विभिन्न धातुओं द्वारा निर्मित बौद्ध मूर्तियों के आसन भाग में भोटी भाषा में लिखित लेख भी इन क्षेत्रों के बौद्ध संस्कृति के क्रमिक विकास के इतिहास के प्रामाणिक स्रोत हैं। आज

इतिहासवेत्ता भोटी भाषा में लिखित इन्हीं उपरोक्त ऐतिहासिक लेखों के माध्यम से हमारे हिमालयीय क्षेत्रों के अतीत पर प्रकाश डालने का प्रयास कर रहे हैं - यह इन क्षेत्रों के लोगों के लिए ही नहीं बल्कि सभी भारतीयों के लिए एक शुभ संकेत है।

आज भले ही हिमालयीय भोटी भाषा-भाषी जनता को हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के माध्यम से शिक्षा दी जा रही है, किन्तु हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि अतीत में इन क्षेत्रों के लोगों के लिए भोटी भाषा ही शिक्षा का एक मात्र माध्यम रहा है। इसी भाषा के माध्यम से ही इन क्षेत्रों के लोगों ने अतीत में भगवान बुद्ध के करूणामूलक उपदेशों का न केवल श्रवण किया है अपितु व्यवहार में भी उतारा है। आज भी हिमालयीय क्षेत्रों में बौद्ध धर्म-दर्शन की परम्परागत शिक्षाएँ इसी भोटी भाषा में ही प्रदान की जाती हैं। इसी भाषा के माध्यम से ही हिमालय की बौद्ध तथा बोन संस्कृति आज तक अपने मूल रूप में सुरक्षित रह पायी है।

आज जब इस भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं सूची में सम्मिलित करने की बात की जा रही हो, उस समय हमें भारत में इस भाषा के बोलने वाले भारतीय लोगों की रायशुमारी के आधार पर इस के महत्त्व को नहीं आंकना होगा बल्कि राष्ट्रीय (यानि भारतीय सन्दर्भ) में इस भाषा के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक औचित्य को मध्यनज़र रखकर, इसके महत्त्व को आंकना होगा। इस भाषा ने प्राचीन भारतीय संस्कृति की बौद्ध विधा के संरक्षण, संवर्द्धन तथा प्रचार-प्रसार में जो कल्पानातीत सेवा की है, उसे किसी भी भारतीय को नहीं भूलना होगा। साथ ही लद्दाख से लेकर अरूणाँचल तक के विभिन्न, जाति, आकार-प्रकार, रंग-रूप तथा स्वभाव के लोगों को एकता के सूत्र में बाँधकर जिस प्रकार हिमालय की सांस्कृतिक एकता एवं अखण्डता को मजबूती देने का काम आज तक यह भाषा चुपचाप करती चली आ रही है, इस सन्दर्भ में भी इस भाषा के महत्त्व को समझना होगा। यदि उपरोक्त बिन्दुओं पर हमारा ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ, तो इस भाषा के साथ न्याय नहीं होगा।

जैसे कि ऊपर कहा जा चुका है कि भोटी भाषा में भारत का गौरवपूर्ण बौद्धमय अतीत सुरक्षित है, इसलिए आज हमें अपने उस गौरवपूर्ण बौद्धमय अतीत को समझने के लिए इस भाषा के महत्त्व को समझना होगा। इतिहास के पन्नों का हवाला देकर खाली हमारा बौद्धमय अतीत अत्यन्त गौरवशाली रहा है, उस काल में नालन्दा, विक्रमशिला, ओदन्तपुरी, तक्षशिला आदि महाविहारों की स्थापना हुई थी, इन महाविहारों में से अकेले नालन्दा महाविहार में दस हज़ार विद्यार्थी छात्रावासों में रहते हुए अपने एक हज़ार गुरुजनों से विद्याग्रहण करते थे, यह कह देने मात्र से हमें भारत का गौरवपूर्ण बौद्धमय अतीत समझ में नहीं आयेगा। हमें उन महाविहारों में उस समय पढ़ाई जाने वाली उन विद्याओं को समझना होगा, जिनके आकर्षण से उस समय एशिया के विभिन्न देशों से विद्यार्थी उन महाविहारों में प्रवेश पाने के लिए आते थे। यदि हमें अपने गौरवपूर्ण बौद्ध अतीत को समझना है, नालन्दा, विक्रमशिला आदि महाविहारों में उस समय पढ़ाई जाने वाली उन विद्याओं को समझना है, तो हमें भोटी भाषा को समझना होगा। हमारे केन्द्रीय विद्यालयों में विद्यार्थियों से खाली -

"भारत का स्वर्णिम गौरव केन्द्रीय विद्यालय लायेगा,
तक्षशिला, नालन्दा का इतिहास लौटकर आयेगा
भारत का स्वर्णिम गौरव केन्द्रीय विद्यालय लायेगा..."

गवाने मात्र से भारत का स्वर्णिम गौरव न लौटकर आयेगा और न ही तक्षशिला नालन्दा का इतिहास ही लौटकर आने वाला है। यदि हमें भारत का स्वर्णिम गौरव लौटाना है, तक्षशिला, नालन्दा का इतिहास लौटाना है, तो हमें पश्चिमी सभ्यता के प्रति हमारे बढ़ते आकर्षण को त्याग कर अपने गौरवपूर्ण अतीत से दिशा लेनी होगी। नई दुनिया के साथ कदम-से-कदम मिला कर चलने पर भी, हमें अपने अतीत से सदैव जुड़कर रहना होगा। नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला आदि महाविहारों के भग्नावशेष आज मौन रूप में अपने जिस गौरवपूर्ण अतीत को बयाँ कर रहे हैं, उन्हें हमें सुनना होगा, समझना होगा। और उन्हें सुनने

समझने के लिए हमें भोटी भाषा के महत्त्व को समझना होगा, क्योंकि उनका अतीत आज भोटी भाषा में ही सुरक्षित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. रिन्पोछे, बुस्तोन – ''बुस्तोन-छोस-जुङ'' (A Religious History of Tibet), Drepung Loseling Library Society Publication, Karnataka, 1991.
2. पल-गोस-लो-ज्योन-नु-''देव-थेर-ङोन-पो'' – 1 और 2, सिठोन-मि-रिगस-पे-टुन – खङ, 1984।
3. पलजोर, सुम्भ खन-पो-ये-शेस – ''गङस-चन-बोद-कि-युल-दु-दम-छोस-दर-छुल'' published by Mongolian Lama Guru, Deva, the Pleasure of Elegant Sayings Printing Press, The Tibetan Monastery, Sarnath, Varanasi, 1965.
4. छोस-फेल, गे-दुन – ''देव-थेर-कर-पो'' Sherig Parkhang, Tibetan Cultural Printing Press, Dharamshala (H.P.), 1993.
5. जगब-पा, वङ-छुग-दे-दन- ''बोद-कि-स्निद-दोन-ग्यल-रब्स'' भाग-1 और 2 तृतीय सं0, Tibetan Cultural Printing Press Dharamshala (H.P.), 1986.
6. जब्स-डुङ, छेतन ''सुम-तगस-कि-शद-पा-थोन-मिइ-ज्यल-लुङ्'' New Light Publications, Tibetan Monastery, Saranath, Varanasi, Reprint, 1989.
7. रबग्यस, टशि "History of Ladakh, Published by C. Namgyal & Tsewang Taru, Leh-Ladakh, 1984.
8. गेगन, सोनम क्यब्स दन ''ल-द्वगस-ग्यल-रब्स-छि-मेद-तेर'', 1975.
9. ''थुउ-कन-डुव-था'', published by 33rd Kargyud Relief and Protection Committee, Central Institute of Higher Tibetan Studies, Saranath, Varanasi, 1995-96.
10. Shakabba, Tsepon W.D. "A Political History of Tibet", New Haven and London, Yale University Press, 1967.

11. ''ग्यइ-यिग-छ़ड-नङ-सल-वइ-बोद-क्यि-ग्यल-रब्स-सल-वइ-मे-लोङ''
12. Franke, A.H. "Antiquities of Indian Tibet, Vol. I&II, Asian Educational, Services, New Delhi, 1992.
13. Hoffmann, Helmut "The Religions of Tibet" Ruskin House, George Allen & Unwin LTD, Museum Street London 1956.
14. Snellgrove, D.L. "Buddhist Himalaya", Philosophical Library New York, Amerika, 1957.
15. ''ल्ह-लस-फुल-जुङ-गि-च़-डेल-ङेस दोन'', published by Kargyud Relief and Protection Committee, Central Institute of Higher Tibetan Studies, Saranath, Varanasi, 1983.
16. सांकृत्यायन, राहुल ''तिब्बत में बौद्ध धर्म'', किताब महल इलाहाबाद, 1996.
17. नेगी विद्यासागर, ''महानुवादक रत्नभद्र'' हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला, 1966.
18. कैलाश-मानसरोवर (स्मारिका), भारत तिब्बत मैत्री संघ, वाराणसी, 25 नवम्बर 1997।
19. लाहुली, के अंगरूप ''संभोट व्याकरण, भोट साहित्य प्रकाशन गृह, केलंग, लाहुल (हि0प्र0), 1963.
20. थोण्डुप, टुल्कु ''तिब्बती पाठमाला'' केन्द्रीय तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, 1976.
21. मजूमदार, डॉ0 आर0सी0 ''वृहत्तर भारत'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1991.
22. उपाध्याय, आचार्य बलदेव ''बौद्ध-दर्शन-मीमांसा'' चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1989.
23. डगस-पा, गुगे खनछेन ङगवङ ''ङरिस-ग्यल-रब्स'' published by organizing Committee for the Commemoration of 1000 years of Tholing Temple, c/o Central Executive of Ngari Association, Thardoling, Mcleod Ganj, Dharamshala (H.P.), 1996.

24. Chhoephel, Gedun "The White Annals" (Translated by Samtem Norboo), Library of Tibetan Works & Archives, Dharamshala (H.P.), 1978.

25. "Karmapa The Sacred Prophecy", published by KAGYU Thubten Choling, 127 Sheafe Road Wappingers Falls, New York (USA) 1999.

26. लाहुली, के. अंगरूप ''क-ग्युद-पा निकाय का उद्‌भव एवं विकास : लाहुल के संदर्भ में'' (लेख) पंचमहाविद्या, स्मारिका, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह-लद्दाख, (ज0क0), 1990.

27. सांकृत्यायन, राहुल ''पुरातत्त्व निबन्धावली'' किताब महल इलाहाबाद, 1958.

28. Tucci, Giuseppe - Indo - Tibetica II, (लोकेशचन्द्र द्वारा अंग्रेजी अनुवाद के साथ सम्पादित) आदित्य प्रकाशन, नई-दिल्ली, 1988

29. ''भोटी भाषा का महत्त्व एवं भोटी भाषा को संविधान के आठवें परिच्छेद में सम्मिलित करने के सन्दर्भ में'' (लेख संग्रह), हिमालयन संस्कृति संरक्षण सभा, दिल्ली।

30. सिंह, अमर-अमरकोष प्रथम काण्ड, मोती लाल बनारसीदास, वाराणसी, 1975.